RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 6 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 17 जुलाई 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

सावन झड़

बागेश्वर

मलबा-बोल्डर से राह में दिक्कत

कार्यालय प्रतिनिधि

बरसात की झड़ी के साथ जलभराव, भूस्खलन व नुकसान की सूचनाएं भी प्राप्त हो रही हैं। इस समय पर्वतीय मार्गों पर यातायात बहुत ही सावधानी से करना है। जगह-जगह मलबा आने से बार-बार मार्ग बाधित हो रहे हैं। मौसम विभाग द्वारा बीच-बीच में मौसम की सूचना दी जा रही है ताकि सावधानी बरती जा सके।

सावन के मौसम से बहार तो है लेकिन कई जगह विपदा का सामना करना पड़ा है। चमोली के छिनका में पहाड़ी टूटने से सड़क मार्ग क्षतिग्रस्त हो गया है। यात्रा के लिये रास्ता बना लिया गया है। बदरीनाथ नेशनल हाईवे पर मौसम खुलने पर ही यात्रियों को भेजा जा रहा है। बाजपुर और टयापुल में भी हाईवे पर बोल्डर गिर रह हैं। मलबा हटाने का कार्य भी लगातार जारी है।

मदकोट के बंगापानी क्षेत्र में ग्राम बोना, तोमिक, गोल्फा, झागुली ओर पैनचखलिया को जोड़ने वाला पैनागाड़ पर बना लोनिवि का पैदल पुल क्षतिग्रस्त होने से आवागमन में परेशानी हो रही है। थल-डीडीहाटमार्ग में भी मलबा आने से बरसात में दिक्कत हो रही है।

चम्पावत जिले में टनकपुर-घाट रोड में बरसात से दिक्कत हो रही है। हालांकि मलबा-बोल्डर हटाने के लिये इन्तजाम किये गये हैं। लगातार हो रही बारिश से पूर्णागिरी मार्ग पर बाटनागाड़ क्षेत्र में भारी मलबा आया है। टनकपुर में जलभराव से काफी नुकसान हुआ है। किरोडा नाले से बाढ़ का पानी बोरागोठ मुख्य मार्ग से नयागोठ एवं घसियारीमण्डी वासियों के घरों में घुस गया।

वैकल्पिक ट्रैक रूट बनेगा

केदारनाथ जाने के लिये एक और वैकल्पिक रूट तैयार होगा। मुख्य सचिव डॉ.एस.एस.सन्धु ने वन विभाग के साथ लोनिवि को इसके लिये मिलकर कार्य करने के निर्देश दिये हैं। पुनर्निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव ने केदारनाथ तक नया वैकल्पिक मार्ग तलाशने पर जोर दिया।

हरिद्वार में कांवड़ियों का मेला

हरिद्वार। सावन में दूर-दूर से कांवड़ियों का आना जारी है। हजारों की संख्या में कांवड़ियों की भीड़ देखते हुस प्रदेश की सीमा पर ही पुलिस ने इन्तजाम किये हैं। उ.प्र., हरियाणा, दिल्ली के रुटों पर विशेष बल तैयार है ताकि यात्रियों को सही रुट से भेजा जा सके। दिल्ली सरकार ने कांवड़ियों की सुविधाओं के लिये 200 शिविर लगाए हैं।

जागेश्वर में कतार

अल्मोड़ा। जग प्रसिद्ध जागेश्वर धाम में इन दिनों शिवभक्तों की कतार लगी हुई है। सावर में सड़क से लेकर गर्भगृह तक भक्तों की लम्बी कतार को घंटों इन्तजार करना पड़ रहा है। दूर-दराज से आने वाले लोगों ने होटल-रिजॉर्ट पहले से बुक करवा रखे हैं। सावन मेले को देखते हुए पुलिस व प्रशासन सतर्क है ताकि मार्ग में जाम इत्यादि की दिक्कत न हो।

जिमीघाट पुल निर्माण न होने से दिक्कत

मुनस्यारी। जमीघाट पुल निर्माण न होने से क्षेत्रवासियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सीमान्त क्षेत्र में सम्पर्क मार्गों तक के हालात खराब हैं। मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने नाराजी जताते हुए बीआरओ 83 आसीसी दरकोट के साथ ही अस्कोट डिवीजन को बैली ब्रिज तैयार करने की मांग की है। उनका कहना है कि नदी में तेज बहाव के कारण आवागमन में खतरा है। खाद्यान्न सामग्री ले जाने के लिये यह पुल अति आवश्यक है। इसी से होकर बीआरओ, आर्मी, आई टीबीपी व आम जनता को नदी पार सामग्री पहुँचाना सरल है। शासन-प्रशासन को पत्र भेजते हुए उन्होंने बताया है कि जिमीघाट का पुल निर्माण न होने और बोग्ड्यार रास्ता खराब होने से माइग्रेश गाँव के लिये जरूरी सामग्री नहीं जा पा रही है। बोना में भी नदी का रूप बड़े तालाब का सा हो चुका है।

व्यंग्य

कुत्तों से सावधान

कौस्तुब आनन्द चन्दोला

हमारे किसी बड़े राजनेता ने एक बार कहा था, 'अगर कुत्ते का पिल्ला भी गाड़ी के नीचे आ जाता है तो हमें बड़ी पीड़ा होती है।' यह क्या बात हुई? कुत्ता कोई इतनी नाचीज है कि आपने उसे एकदम घटिया समझ लिया? इस राजनेता की बात पकड़कर किसी समूह विशेष ने उसे अपने से तुलना करना समझ लिया। बात ने तूल पकड़ लिया। बस फिर क्या था, एक चुनाव ही इस कुत्ते पर जीता-हारा गया।

ऐसा लगता है कि कुत्ते भी आजकल पूरी तरह से राजनैतिक हो गए हैं। आंध्र प्रदेश का एक कुत्ता आजकल खबरों की सुर्खियों में छाया हुआ है। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो चुका है। खबर चौंका देने वाली है कि आंध्र प्रदेश में एक कुत्ता वहाँ के मुख्यमंत्री के पोस्टर को फाड़ता हुआ दिखाई दिया। उस राजनीतिक पार्टी के एक कार्यकर्ता को कुत्ते की हरकत इतनी बुरी लगी कि उसने पुलिस स्टेशन में कुत्ते के विरुद्ध एफआईआर लिखवा दी। कुत्ते पर आरोप है कि उसने मुख्यमंत्री का पोस्टर फाड़ा है, यह विपक्षी दलों की चाल हो सकती है। पुलिस से मांग की गई है कि कुत्ते को जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाए। क्योंकि उस कार्यकर्ता की भावनाओं को गहरी ठेस पहुँची है।

दूसरी खबर लखनऊ के तालकटोरा क्षेत्र से आई है कि एक सड़क छाप कुत्ते ने एक छोटे लड़के को बुरी तरह का काट डाला, जिसे बाद में हास्पिटल में भर्ती कराना पड़ा। लड़के के पिता बहुत आहत हुए और वे रिवाल्वर लेकर कुत्ते को दौड़ने लगे। कुत्ता तो रफूचक्कर हो गया, परन्तु इसका वीडियो वायरल हो गया। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और उनका रिवाल्वर भी जब्त कर लिया। उस व्यक्ति पर कुत्ते के हत्या का प्रयास, शस्त्र का गलत प्रदर्शन, शान्ति भंग करने जैसी गम्भीर धाराओं में मुकदमा दर्ज हो गया। वह व्यक्ति जमानत कराने के लिए दौड़ रहा है, कुत्ता मजे से सड़कों पर घूम रहा है।

अब आप कुत्ते के महत्व को समझ सकते हैं। एक और राजनेता ने अपने साथ मीटिंग में अपने महत्वपूर्ण कुत्ते को टेबिल पर बैठाया, अन्य राजनेताओं के साथ-साथ एक ही प्लेट से राजनेता लोग और प्यारा कुत्ता बिस्कुट उठा रहे थे, फर्क इतना था कि राजनेता हाथ से बिस्कुट उठा रहे थे और कुत्ता जीभ से। जिसने उस प्लेट से बिस्कुट उठाना उचित नहीं समझा, उसे पार्टी से बाहर कर दिया गया। कुछ लोग टीबी डिबेट में उसी तरह लड़ते, चिल्लाते हैं जैसे उनके घर के कुत्ते भोंकते हैं। उनसे सब डर जाते हैं। यह शिक्षा उन्होंने अपने कुत्तों से ही ली होगी, क्योंकि जब उनके कुत्ते भोंकते हैं तो किसी की हिम्मत है कि उनके घर में कदम रख ले।

कुत्तों का राज तो पहले से ही सड़कों, पार्कों, सार्वजनिक स्थानों पर था ही, अब तो महत्वपूर्ण कुत्तों का स्थान बैठकों के सोफासेट के ऊपर भी हो गया है। सोफासेट तक तो ठीक भी मान लें परन्तु अब बात आगे बढ़ गई है। अब तो कुत्ता और मालिक एक ही बेड पर सोते हैं परन्तु ऐसे कुत्तों को आप कुत्ता कहने की हिमाकत मत कर देना। कुत्तों का स्थान अब मनुष्य से भी महत्वपूर्ण हो गया है। आये दिन आप समाचार पत्रों में कुत्तों की वफादारी के किस्से सुन सकते हैं तो दूसरी ओर कुत्तों की क्रूरता के समाचार भी पढ़ सकते हैं। हाँ, अगर आपने उन पर क्रूरता दिखाई तो आप पर कई सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज किया जा सकता है लेकिन कुत्तों द्वारा की गई क्रूरता पर उसे कुछ नहीं होगा, ध्यान रखें। अत: सावधान!

अब आपको मैं आप बीती सुनाता हूँ जिससे आपको आजकल के महानगरी कुत्तों का महत्व समझ में आ जाएगा। मेरा बेटा एक मल्टीनैशनल कम्पनी में बेंगलुरु में काम करता है। लाखों कमाता है। वह दो कमरों के एक बढ़िया फ्लैट में रहता है। उसने दो बिल्लियां और एक कुत्ता पाल रखा है। वह मुझे फोन पर उनके बारे में बताता रहता है।

मैं पशुप्रेमी विशेष तौर से कुत्ता प्रेमी बिल्कुल नहीं रहा। हाँ मैंने गाँव से ही हाई स्कूल पास किया था। हमारे घर-गाँव में गाय, भैंस, बकरी, बैल आदि यहाँ तक कि भैंसा, सांड भी थे उनकी

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

कौतिकों का मायाजाल

किसी भी सरकार के लिये यह सब बहुत अच्छा होता है कि उसकी प्रजा किसी न किसी न किसी मायामोह में फंसी रहे। इसके लिये आवश्यकता पड़ने पर साधन भी उपलब्ध करवा दिये जाते हैं। ऐसा ही कुछ पर्वतीय प्रदेश में देखने को मिल रहा है.....

हम देख रहे हैं कि उत्तराखण्ड उदय के बाद से महोत्सवों की बाढ़ आ चुकी है, पुरस्कार-सम्मानों की झड़ी लग चुकी है, कला-संस्कृति बचाने की आंधी चल रही है, अपनी दुदबोली बचाने के लिये बादल उमड़ पड़े हैं, ग्राम संवारने के लिये महानगरों से रैला निकल पड़ा है। लेकिन क्या वास्तव में ऐसा हुआ है? क्या हमारे पौराणिक और व्यापारिक मेलों का पुराना स्वरूप बचा हुआ है? क्या हम अपनी दुदबोली को आपस में बोल रहे हैं? क्या हमारी संस्कृति के पुराने ढब शेष हैं?

बहुत साफ दिखाई दे रहा है कि भीड़ में चेहरे दिखाने की होड़ ने महोत्सवों की आड़ ली है। पुरस्कार-सम्मानों की जगह उस भीड़ ने ले ली है जो लगभग सभी हो रहे आयोजनों में दिखाई देती है। कला-संस्कृति का नाम सड़क पर कलाकृतियां बना देना, ऐपण सजा देना, छोलिया नर्तकों को नचा देना, चौराहे पर पहाड़ की रसोई सजा देना मात्र मान लिया गया है। हमारे पौराणिक और व्यापारिक मेलों को निगलने के लिये मंच सजने लगे हैं। यह सब कहना-सुनना-लिखना माने कुछों का दिल दुःख सकता है परन्तु यह बड़ी सच्चाई है। कुछ भरोसा हुआ था पुस्तकों के बहाने युवाओं को जोड़ने की बात चली थी लेकिन शहर के पुस्तकाल बंजर पड़े और पहाड़ के दमघोटू, तो कैसे मान लें कि यह पुस्तकों के मेले हमारी उपलब्धि है। क्या किसी ने सोचा है उजड़ रहे पुस्तकालयों में ही मेला हो। क्या सरकार व इसके विभाग व झल्लेदार आयोजनों के लिये दांव खेलने वाले दम तोड़ रहे पुस्तकालयों को बचा लेंगे? क्या मोबाइल खेल में उलझे बच्चों को उनकी जड़ों से जोड़ा जा सकेगा? यह सब सभी सम्भव है जब मायाजाल न बिछे।

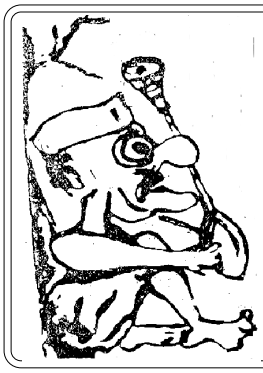

फसक

दाज्यू, कालेज खुलते ही चकमक होने वाली ठैरी

स्थानान्तरण के बाद समेटा-समेट हो रही है बल

दाज्यू, जुलाई का महीना झमाझम है। बच्चों की भीड़ प्रवेश के लिये कतार में होगी ही, जनसंख्या बहुत है। इस भीड़ का नेता बनना भी दाल-रोटी का जुगाड़ हुआ। कालेज खुलते ही चकमक होने वाली ठैरी। लोकसभा चुनाव की तारीख तय होती रहेगा, सामने छात्र संघ का मसला है। महाराज, पढ़ने-पढ़ाने वाले गिनती भर के हुए। रील बनाने वाली भीड़ बढ़ती जा रही है। ऊपर से समाज की ऐसी-तैसी करने वाले अलग घूम रहे हैं। क्षत्रिय सभा, राजपूत, भीमआर्मी, करणी सेना, ब्राह्मण सभा, दलित सेना, गुर्जर जाट.....पता नहीं कितने प्रकार का हंगामा दिन-रात सोशल मीडिया की मण्डी पर फैला हुआ है। भगवान बचाए इन सबसे। गरीब जनता रोटी का जुगाड़ देख रही है और ये सब मूंछ में ताव देकर गुर्र गुर्र कर रहे हैं। इनके तमाशे से जनता गजबजा जा रही है और पुलिस-प्रशासन को जूझना पड़ रहा है।

दाज्यू, घोर कलजुग है। गरीब-गुर्दी जनता को लपेटने वाले मनमौजी बने हुए हैं। इनकी लट्ठ-फोड़ से सबको बचना चाहिये। बरसात में कीड़े-मकोड़े बहुत निकलने हैं। कलजुग में तो रह मौसम में नंग्योव होती है बल। पकौड़े तलने वाला भी आखिर कब तक तलता रहेगा।

दाज्यू, गरुड़प्रताप का स्थानान्तरण हो गया है बल। टैम बहुत खराब चल रहा है। रघ्घू बता रहा था- 'गरुड़प्रताप ने प्राचार्य बनते ही कागज भरने शुरु कर दिये थे, नोटिस पे नोटिस, धकाधक बयान, स्टाफ में धुंआ उठने लगा और सूचना का अधिकार से शुरु हुआ झगड़ा पुलिस तक चला गया था। सीएम कार्यालय तक शिकायतों का मूलपाठ होने लगा। लुगाईयां न्याय की गुहार लगाने लगीं। उलझे मामले और उलझते रहे। कर्मचारी बेचारे मजबूर हुए। कौन क्या कहे, क्या करे। अब हाल महाभारत के युद्ध में मची मारकाट के बाद की युद्धभूमि जैसा लग रहा है।' स्थानान्तरण के बाद समेटासमेट हो रही है बल।

दाज्यू, जब लड़ाई-झगड़ा होता है तो मारकाट और उसके बाद बचे-खुचों का रोना ही सुनाई देता है। दुनिया की चकमक में बहुत तूफान आए होंगे और आएंगे लेकिन दिए की रोशनी उम्मीद देती रहती है। भवाली कैंची धाम मन्दिर समिति और व्यापारियों ने बैठक कर शालीन कपड़े पहनकर आने वालों को ही प्रवेश देने की बात कही है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

सत्ता नष्ट और भ्रष्ट.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

देखभाल और सेवा-टहल मैं भी करता था। अत: यह नहीं कह सकता कि मैं कि पशु प्रेमी नहीं हूँ। हाँ, जरूर कुत्ता प्रेमी नहीं रहा। हमारे घर-आँगन जरूर एक-दो कुत्ते भी रहा करते थे, मैं और हमारे परिवार के लोग रोज ही उन्हें रोटी-चावल आदि खाना देते थे। मैं यह भी मानता हूँ कि पशुओं और मानव का सह-अस्तित्व होता है। लेकिन आजकल विशेष तौर पर कुत्तों का महत्व मनुष्य से अधिक हो गया है।

लौटता हूँ अपने बेटे की पशुप्रेम पर। मैं फोन पर यदा-कदा उसे कुत्ता-बिल्लियां पालने पर धीरे से डांटता था या कहो आग्रह करता था कि इन्हें ही परिवार न समझो, अब बहू आ गई है। हमें पोते-पोती का मुंह दिखला दो, मैं और तेरी माँ, दादा-दादी बनना चाहते हैं। लेकिन वे दोनों मियां-बीबी तो इन तीनों पशुओं को परिवार मानते थे। उन पशुओं के चक्कर में लखनऊ हमसे मिलने भी बड़ी मुश्किल से आते। क्योंकि उन तीन प्राणियों को कहाँ रखते? कभी तीन-चार दिनों के लिए आते तो, उन्हें हजारों खर्च कर 'एनिमल क्रेच' मैं रख कर आते, तो उन्हें हमसे ज्यादा उनकी चिन्ता बनी रहती थी। हररोज दो-चार घण्टे के बाद क्रेच वालों से फोन कर उनका हाल-चाल लेते, उन्हें फोन पर ही पुचकारते थे। मैं हैरान, परेशान था। इस बार जब वे घर आये तो मैं और मेरी पत्नी ने बहुत प्यार से उन्हें आगा-पीछा समझाया, मान-मनौव्वल की तो वे एक बच्चा पैदा करने के लिए सहमत हो गये। हम दोनों ने कई मन्दिरों में मन्नतें मांगी। बहू-बेटे को भी जबरदस्ती मन्दिर तक ले गये। लखनऊ आ कर भी वे कुत्ते-बिल्लियों के सामानों की दुकान खोजते। और कुछ नया सामान कुत्ता-बिल्लियों के लिए खरीदते। हम दोनों आश्चर्य चकित थे। वे जल्दी ही बंगलूरू लौट जाते।

अन्तत:! भगवान ने हमारी सुन ली और हमें कुछ समय बाद एक पोती के प्राप्ति हो गयी। अब तक हम बैंगलुरू कभी नहीं गए थे, लेकिन अब तो जाना ही था। मेरी पत्नी तो पोती होने के एक माह पूर्व ही चली गई थी, उसे जच्चा-बच्चा की देखभाल करनी थी। लेकिन मैं जब पोती पैदा हो गई, तब वहाँ पहुँचा। मैं बहुत खुश था। पोती को दर्शन की तीव्र लालसा थी। लेकिन जब मैं अपने बेटे सुधीर के घर पहुँचा तो परेशान हो उठा। हुआ यह कि जब मैं उसके घर में पहुँचा तो देखा उसके पास एक बड़ा सा हॉल था जिसमें बैठकी थी, सुन्दर बड़े सोफा लगे थे और खाने की टेबल, टीवी सब कुछ था। साथ में दो बेडरूम भी थे। एक में तो बहू, बच्चा और बेटा रहते होंगे। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मेरा सामान एक दूसरे बेडरूम में रख दिया गया। जब मैं कमरे में पहुँचा तो देखता क्या हूँ कि कुत्ता महोदय बेड में लम्बे होकर आराम फरमा रहे हैं। उसने एक दृष्टि मुझ पर डाली और बिना भौंके ही ही तान कर बिस्तर में सो गया। मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि पत्नी पर डाली और पूछा, 'यह क्या है?हम कहाँ सोएंगे?' पत्नी ने उत्तर दिया, 'इसी बेड पर।'

मैं अवाक रह गया, मैंने डांटते हुए ऊँचे स्वर में कहा, 'तेरा दिमाग खराब हो गया है? क्या एक महीने से यह कुत्ता भी तुम्हारे बिस्तर पर ही सो रहा है?' 'अरे! यह कभी बैठक में साफो पर सोता है कभी रात को इसी बिस्तर पर आ कर सो जाता है, अब यहाँ यही दो-तीन कमरे तो ठहरे।' मैं चिल्लाया, 'इस कुत्ते को बाहर निकालो।' पत्नी ने अपने होठों पर अंगुली रखकर मुझे धीरे बोलने का इशारा किया और समझाते हुए बोली, 'धीरे बोलो! सुधीर सुन लेगा, इसे कुत्ता कहने पर वह बहुत नाराज होता है। इसका नाम सेंटी है।' 'अरे ! सेंटी हो या डेंडी, मैं इस बिस्तर में क्या, इस कमरे में भी नहीं सो सकता हूँ, मेरा सामान बाहर रखो।'

समझौतावादी पत्नी ने समझाया, 'अरे! रात में यह सुधीर के साथ बाहर सोफा में सोता है। कभी-कभी रात को आ कर मेरे बेड पर भी सो जाता है, उसकी आदत पड़ी है। आजकल लोग घर में अधिक आते-जाते हैं, इसलिए भी वह यहाँ आकर बेड पर सो जाता है।'

'अरे! पागल जो भी हो, मैं इस कमरे क्या इस घर में भी नहीं रह सकता हूं।' 'अरे! कैसी बातें करते हो? तुम्हें नहीं पता था कि सुधीर ने कुत्ते-बिल्लियां पाल रखी हैं? यह तो तुम्हें सोचना चाहिए था कि उसके घर में एक कुत्ता और दो बिल्ली पहले से ही है। यह कोई आज नई बात तो है नहीं?'

'अरे भागवान! इसका मतलब यह थोड़ी ही था कि बिल्ली, कुत्ते और हम एक ही बिस्तर पर सोएंगे? मैंने सोचा था- कुत्ता, बिल्लियों के लिए अलग स्थान होगा। तब मुझे क्या आपत्ति होती। लेकिन यहाँ तो एक ही बिस्तर पर कुत्ता और हम?'

मेरी ऊँची आवाज में सुन सुधीर भी कमरे में आ गया और उसने पूछा, 'क्या बात है पापा! कमरा पसन्द नहीं आया क्या? सामान वैसा ही पड़ा है।' मैंने मुंह फेर लिया। मेरी पत्नी ने ही बात सम्भालते हुए उत्तर दिया, 'सुधीर! तुम तो जानते ही हो कि तेरे पापा साफ सफाई के मामले में कितने शक्त हैं। कुत्ते को बिस्तर में देख बिदक गए और कह रहे हैं कि वे इस कमरे में नहीं सो सकते हैं। जहाँ कुत्ता भी उसी बिस्तर में सोता हो।'

सुधीर ने समझाया, 'अरे पापा! आपको तो पता था कि मेरे फ्लैट में दो बिल्लियां रानू-बानू और यह सैन्टी भी रहता है। आप जानते हैं फ्लैट में कितनी जगह नहीं होती है। अलग कमरा इनके लिए कहाँ से लाता। वैसे भी आप लोग कुछ दिनों के लिए आए हैं। जब तक आप यहाँ हैं यह रात में मेरे साथ साफे में सोयेगा। दिन में कभी यहाँ आ जाता है। थोड़ा एडजस्ट कर लीजिएगा। जहाँ तक सफाई की बात है, मैं बताता हूँ कि सैन्टी सप्ताह में रविवार को दिन महंगे विदेशी सैम्पू से नहाता है, मैं उसे स्वयं मैं नहलाता हूँ। उसका अलग तौलिया है। वह एक मनुष्य से भी साफ सुथरा रहता है।' मैंने तमतमाते हुए कहा, 'तुम्हारे कुत्ते बिल्लियां हगते-मूतते भी तो होंगे या वह भी नहीं करते?' 'कैसी बातें करते हैं, पापा! बिल्लियों के लिए बालकनी में विशेष प्रकार का बाक्स रखा है, जिसमें जा कर ही वे पौटी करते हैं, वे और कहीं कभी इधर-उधर नहीं करते हैं। सैन्टी को मैं दो समय-सुबह-शाम बाहर घुमाने ले जाता हूँ, और घर के अन्दर आने से पहले उसके चूतड़ और अन्य स्थानों को यहाँ तक के पांव के नीचे तलवों को भी मैं वैट वैप्स से पोंछ कर ही घर के अन्दर लाता हूँ।'

'कुछ भी हो! जिस कमरे के सामने वाली बालकनी में बिल्लियां टट्टी करती हों, कुत्ता बिस्तर में सोता हो, मैं उस कमरे और उस बिस्तर पर सो नहीं सकता हूँ। सपने में भी मुझे कुत्ता ही दिखाई देगा।'

'ठीक है, ठीक है, मैं कुछ करता हूँ लेकिन पापा! क्या आप सैन्टी को उसके नाम से नहीं पुकार सकते हैं?'

वह कुछ नाराज सा हो कर बाहर निकल गया।

सुधीर के जाते ही मेरी पत्नी मुझ पर बरस पड़ी, 'अभी बहू बेटे के घर भीतर आए दस मिनट भी नहीं हुआ, ठीक से बातचीत भी नहीं हुई, पोती का मुख भी अभी देखा नहीं। बस आते ही तुम अपनी हेकड़ी दिखाने लग गये। आते ही सुधीर का मूड खराब कर दिया, बेचारा।' मैं भी सोचता रहा- आखिर सुधीर की भी क्या गलती है? वह नौ-दस सालों से अकेले इस शहर में रह रहा है। अभी दो वर्ष पहले उसकी शादी हुई है। अपना अकेलेपन दूर करने के लिए उसने कुत्ते-बिल्ली पाल लिए थे। उन्हें वह बच्चों की तरह पालता था, जिनसे प्रेम हो जाना स्वाभाविक था। इनके साथ व्यस्त रहने के कारण शायद वह शहर के अन्य व्यसनों में नहीं पड़ा था। मैं सोचता रहा, किन्तु मेरे पुरातन संस्कारों ने जोर मारा। इस बीच अखबार पलटा समाचार था कि सचिन तेंदुलकर के पुत्र अर्जुन तेंदुलकर, जो लखनऊ में आईपीएल मैच खेलने के लिए आए था, स्टेडियम में घूम रहे एक स्नैपर डाग ने उसका हाथ काट लिया और वह घायल हो गया। अब वह इस मैच में नहीं खेल पाएगा। मैं अखबार उठाकर रसोई में प्रात: कालीन चाय बना रही पत्नी को अखबार दिखलाते हुए बोला, 'कुत्ते किस कदर खतरनाक होते जा रहे हैं, लखनऊ में सचिन के लड़के को काट डाला, मुझे तो सुधीर की बेबी की चिंता हो रही है? वह सेंटी तो बार-बार उनके बेडरूम में घुस जाता है।'पत्नी ने मुझे झिड़कते हुए कहा, 'तुम्हें पूरे अखबार में यही कुत्ते वाली खबर ही दिखाई दी, कुत्तों के बारे में अच्छी-अच्छी खबरें भी आती है।'

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्मरण

जिनको प्रायः भूल गये

ऐसे थे हमारे दीवान दा 'दीवान सेठ जी'

एम.एस.सयाना

दीवान सेठ जी मूलतः चिलकिया, पिथौरागढ़ के रहने वाले थे। उनके पिता स्व. चन्द्र सिंह पांगती समाजसेवी थे। उन्होंने अपने समय में गाँव में स्कूल खुलवाए, घराट बनवाए तथा रास्ते का निर्माण किया।

दीवान सेठ जी अपने समय के जोहार समाज के जानेमाने सेठ थे, तिब्बत व्यापार के समय बागेश्वर उत्तरायणी मेले में तिब्बती भेड़ का ऊन गांधी आश्रम वालों को बेचा करते थे। एक बार ऊन का दाम इतना बढ़ गया कि सूठ जी दो बक्सा नोट अपने खच्चरों में लाद कर चिलकिया गये, व्यापार घटने के बाद उन्होंने भैंसखाल में आरामशीन लगवाई परन्तु लकड़ी के अभाव से मशीन बन्द करनी पड़ी। इसके बाद उन्होंने जंगलात का कार्य किया, उसमें भी अपेक्षाकृत लाभ नहीं हुआ। इस कार्य को छोड़कर उन्होंने 'दीवान ट्रान्सपोर्ट' की स्थापना की। अपने समय में सेठ जी ने सभी गरीब तबके लोगों की खूब मदद की। किसी की बेटी की शादी हो या कोई दुःख बीमार हो, सेठ जी सभी को उधार दिया और कभी किसी से भी पैसे लौटाने के लिये तकाजा नहीं नहीं करते थे। जिसने लौटाया तो ठीक नहीं लौटाया तो उनको कहना तौहीन समझते थे। सेठ जी को अनेकों लोगों ने पैसे नहीं लौटाये। वे सही मायने में गरीबों के मसीहा थे। जब वे हल्द्वानी में आकर बसे तो भोटिया पड़ाव में 52 बीघा जमीन जोहार संघ के नाम से लीज पर थी, यदि वे चाहते तो कई बीघा अपने नाम कर सकते थे परन्तु उनकी इतनी महानता कि उन्होंने एक इंच जमीन अपने नाम नहीं की तथा औरों को जमीन दिलाई। जमीन के सम्बन्ध में अनेक विवाद भी होते रहते, लोग अपनी समस्याएं लेकर सेठ जी के घर जाते थे, वे आसानी से उनका समाधान कर देते थे। उनका निर्णय सर्वमान्य हुआ करता था। सभी पड़ाववासी उनका आदर करते थे क्योंकि उनका कहीं पर भी किसी प्रकार लोभ लालच नहीं था। ऐसे निस्वार्थ व्यक्तित्व को जोहार रत्न से नवाजा जाना चाहिये।

ज्योतिष की बातें - 135

17 जुलाई 2023 को सूर्य मित्रराशि कर्क में प्रवेश करेगा। उस पर कोई शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं होगी, इस कारण सूर्य अत्यन्त शुभ फलदायक रहेगा। सूर्य तीसरे, छठवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ फलदायक होता है इसलिये अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, आत्मसम्मान, प्रतिष्ठा, सफलता आदि अपने कारक विषयों में वृषभ, कुम्भ, तुला व कन्या राशि के जातकों के लिए अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशि के जातकों को सामान्य फल समझना चाहिए।

23 जुलाई 2023 को शुक्र सिंह राशि में गोचर करते हुए वक्री हो जाएगा। अगले 44 दिन तक वक्री रहेगा। इस अवधि में शुक्र से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फलों में प्रबलता देखी जाएगी।

अधिक मास- मंगलवार 18 जुलाई 2023 शुक्लपक्ष प्रतिपदा से श्रावण अधिक मास प्रारम्भ हो जाएगा। इसे पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं। पुरुषोत्तम मास में गृहप्रवेश, विवाह आदि कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता है। इस पुरुषोत्तम मास में भगवान विष्णु का निष्काम पूजन, अर्चन, ध्यान, मन्त्र जप आदि विशेष रूप से करना चाहिए । शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 26 पेपरलेस सिस्टम

आजकल आनलाइन सिस्टम आ जाने के कारण पेपरलेस सिस्टम की बहुत चर्चा होती है। कागज के उत्पादन में पेड़ों की कटाई करनी पड़ती है इस कारण पर्यावरण की सुरक्षा के लिए, पेड़ों को बचाने के लिए पेपरलेस सिस्टम को प्रोत्साहित किया जा रहा है। वह बात अलग है कि करोड़ों छात्रों को प्रतिवर्ष करोड़ों पुस्तकें नई नई छपा कर दी जाती हैं। किसी भी जगह कागज का प्रयोग न हो, रेलवे टिकट भी मोबाइल से दिखा दिया जाए, सारी पुस्तकें आनलाइन उपलब्ध हों, हर प्रकार का रिकार्ड आनलाइन रखा जाए जिससे कागज की बचत होगी तो पेड़ों की बचत होगी और पर्यावरण सुधरेगा, ऐसा कहा जाता है। क्या सच में ऐसा होगा? विचार करें।

सभी कार्य पेपरलेस आनलाइन करने के लिए हर व्यक्ति को हाई क्वालिटी का मोबाइल और मोबाइल में पर्याप्त डाटा निरन्तर रखना पड़ेगा। करोड़ों, अरबों पुस्तकें, सभी पुस्तकालय, और सभी प्रकार का रिकार्ड आनलाइन, नेट पर, वेबसाइट पर सुरक्षित रखने के लिए निरन्तर ऊर्जा की आवश्यकता होती है। पुस्तकों को पढ़ने के लिए, रिकार्ड को आवश्यकतानुसार देखने के लिए बार-बार डाउनलोड करना होगा उसके लिए पुनः ऊर्जा की आवश्यकता होगी। 4जी 5जी डाटा पूरी जनता को उपलब्ध कराने के लिए निरन्तर अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है । इतनी अधिक ऊर्जा कहाँ से आएगी? किसी भी रिकार्ड को कागज पर सुरक्षित रखने की तुलना में अक्षनलाइन सुरक्षित रखना क्या सस्ता पड़ेगा ? अतः पेपरलेस सिस्टम भी पर्यावरण के हित में नहीं होगा । मेरे विचार से तो सभी रिकोर्ड कागज पर सुरक्षित रखते हुए कागज का न्यूनतम उपयोग करना चाहिये और साथ ही आनलाईन आफलाइन में सन्तुलन बनाते हुए पर्यावरण की सुरक्षा के लिये मोबाइल डेटा का भी न्यूनतम उपयोग करना चाहिये ।

-सरल

मुनस्यारी यूथ वेलफेयर एसोसिएशन MYWA

जोहार-मुनस्यार के सभी छात्र-छात्राओं के बेहतर भविष्य के लिये संकल्पित मंच

----समन्वयक----

महेश धर्मशक्तू
देहरादून चैप्टर
9411542699

कैलाश धर्मशक्तू
हल्द्वानी चैप्टर
9412982795

----शुभेच्छु----

नरेन्द्र सिंह जंगपांगी
9530400041

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

विपक्ष एवं जन संगठनों ने किया है ऐलान

नफरत नहीं, रोजगार, सद्भावना, कानून का राज चाहिये

उत्तरकाशी के पुरोला में जिस प्रकार से हलचल हुई थी और सद्भाव का माहौल खराब होने को था, वह तो थम चुका लेकिन कहीं भी कभी भी फिर वैसा न हो, इसको लेकर विपक्ष खासकर वामदल चारों ओर आन्दोलन शुरु कर चुके हैं। देहरादून से शुरु हुआ यह अभियान अन्य जगह भी जारी है। इसी क्रम में हल्द्वानी के बुद्ध पार्क में उत्तराखंड के विभिन्न जन संगठनों, राजनीतिक दलों और जन मुद्दों से जुड़े हुए लोगों के द्वारा राज्य में कौमी एकता को कायम करने हेतु सद्भावना सम्मेलन का आयोजन किया गया। 'नफरत नहीं, रोज़गार दो', 'संविधान बचाओ, लोकतंत्र बचाओ' और अन्य नारों के साथ कांग्रेस, उत्तराखण्ड परिवर्तन पार्टी, सीपीआई, सीपीआइ (एम), सीपी (एमएल), एएपी और अन्य दलों के प्रतिनिधियों के साथ जन संगठनों के प्रतिनिधि एवं सैकड़ों आम लोग एकत्र हुए। राज्य में लगातार आपराधिक तरीकों द्वारा धर्म के आधार पर निर्दोष लोगों को निशाना बनाने के खिलाफ और अल्पसंख्यक एवं दलित समुदाय पर बड़ते हुई अत्याचार की निन्दा करते हुए प्रतिभागियों ने कहा कि सरकार राज्य में कानून का राज फिर स्थापित कर जनहित की नीतियां, जैसे रोज़गार की योजनाएं, वन अधिकार कानून, इत्यादि पर काम करे। कांग्रेस के राज्य अध्यक्ष करन माहरा ने कहा कि जोशीमठ की त्रासदी से ले कर अंकिता हत्याकांड तक, राज्य के सब तबके असुरक्षित हैं। लेकिन सरकार सिर्फ नफरती और साम्प्रदायिक प्रचार कर रही है। माले के राज्य सचिव इन्द्रेश मैखुरी ने कहा कि लव जिहाद और लैंड जिहाद जैसे शब्दों द्वारा अपराधों को साम्प्रदायिक रंग दिया जा रहा है, जबकि इन बातों का न कोई सबूत है और न ही कोई डाटा, और बहुत ऐसी घटनाएं झूठी भी साबित हो गयी हैं। उत्तराखण्ड लोक वाहिनी के अध्यक्ष राजीव लोचन साह ने कहा कि राज्य की इतिहास और संस्कृति में यह नफरत कभी नहीं रही जिसको आज कल झूठों के आधार पर फैलाया जा रहा है। उत्तराखण्ड परिवर्तन पार्टी के अध्यक्ष पी.सी. तिवाड़ी ने कहा कि सरकार के कदमों में लगातार धार्मिक भेदभाव दिख रहा है, जिसके द्वारा ऐसा माहौल खड़ा करने की कोशिश की जा रही है जहाँ सरकार राज्य के सारे संसाधन बड़ी पूंजीपतियों को बेच सके।

सम्मेलन में आयोजकों ने तय किया कि इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए श्रीदेव सुमन के शहादत दिवस के अवसर 25 जुलाई को उनके गाँव जौल में तमाम संगठनों के प्रतिनिधि आम नागरिकों के साथ प्रजातंत्र दिवस को मनाएंगे। उस दिन ऐसे ही कार्यक्रम प्रदेश भर में भी आयोजित किये जायेंगे। फिर भारत छोडो आन्दोलन की बरसी 9 अगस्त को देहरादून में इन्ही मुद्दों पर कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा और प्रदेश भर में आवाज़ उठायी जाएगी। इस बीच में नफरत नहीं, रोज़गार दो के मुद्दे पर प्रदेश भर में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया जायेगा।

सम्मेलन को हल्द्वानी के विधायक सुमित हृदयेश, उत्तराखण्ड परिवर्तन पार्टी के महासचिव प्रभात ध्यानी, समाजवादी लोक मंच के मुनीश कुमार, स्वतंत्र पत्रकार त्रिलोचन भट्ट, सीपीआई के राष्ट्रीय कौंसिल सदस्य समर भण्डारी, सीपी(एम) के राज्य सचिव राजेंद्र नेगी, चेतना आन्दोलन के शंकर गोपाल, उत्तराखण्ड सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, क्रन्तिकारी लोक संगठन के पी.पी. आर्य, पीपल्स साइंस मूवमेंट के विजय भट्ट, एसएफआई के हिमांशु चौहान, रचनात्मक महिला मंच के अजय जोशी, वरिष्ठ आन्दोलनकारी बच्ची सिंह बिष्ट, वन गुज्जर ट्राइबल युवा संगठन के मोहम्मद इशाक, और अन्य वक्ताओं ने भी सम्बोधित किया। सद्भावना समिति के भुवन पाठक और वन पंचायत संघर्ष मोर्चा के तरुण जोशी ने कार्यक्रम का संचालन किया और उत्तराखण्ड महिला मंच की उमा भट्ट ने अध्यक्षता की।

परिक्रमा

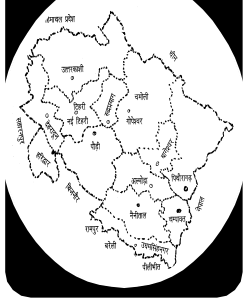

रानीखेत माहौल खराब होने से बचा

रानीखेत। समुदाय विशेष के युवक की ओर से शादी का झांसा देकर तीन बच्चों की माँ का शारीरिक शोषण का मामला उजागर होते ही शहर में बबाल मच गया। हिन्दूवादी संगठनों ने बाजार बन्द कराने के साथ प्रदर्शन किया। गढ़वाल की तहत यहाँ भी माहौल बहुत खराब हो सकता था लेकिन सूझबूझ व प्रशासन की हरकत के बाद माहौल शान्त हो गया। पूरे प्रकरण में जाँच-पड़ताल होती रहेगी लेकिन अच्छा हुआ कि सुरम्य नगरी झुलसने से बच गई।

देहरादून में लोक भाषा सम्मेलन

कुमाउंनी-गढ़वाली : बोलोगे तो बचेगी

कौस्तुभ आनन्द चन्दोला

उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून में वृहद लोक-भाषा सम्मेलन हुआ। जिसका आयोजक उत्तराखड राज्य भाषा संस्थान देहरादून था। यह लोक-भाषा सम्मेलन जैसा कि महानगरों में होता है, एक शानदार होटल के आलीशान हाल में सम्पन्न हुआ, आयोजकों ने हर तरह से लोक-भाषा सम्मेलन को गरिमामई बनाने का सुन्दर प्रयास किया था, कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी थी। जिसके लिए राज्य भाषा संस्थान प्रशंसा का पात्र है।

जब इतने शानदार ढंग से लोक-भाषा सम्मेलन था तो वक्ता भी उतने ही गरिमामयी और विद्वान थे। उनकी विद्वत्ता पर कोई प्रश्न चिन्ह लगाने का प्रश्न ही नहीं था। जब लोक-भाषा सम्मेलन था तो हाल में उपस्थित दर्शक भी लोक-भाषा के जानने वाले, लोक-भाषा के लेखक, साहित्यकार, लोक-भाषाओं की पत्रिकाओं के सम्पादक व स्थानीय पत्रकार ही होंगे, अर्थात इस हाल में उपस्थित जन लोक-भाषा जानने वाले थे और उसके बारे में और अधिक गहराई से जानने के उत्सुक थे, क्योंकि मंच पर लोक-भाषा के मर्मज्ञ जो बैठे थे। मुझे नाम लेने में कोई गुरेज या परहेज नहीं है, मंच पर थे- डा.कमला पन्त जी, कुमाउंनी भाषा और व्याकरण की ज्ञाता। डा.लोकेश नवानी गढ़वाली भाषा के विशेषज्ञ और लोक भाषा आन्दोलन के अग्रणी, डा. नन्दकिशोर हटवाल, डा.हयात सिंह रावत। मुख्य अतिथि थे डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल, भाषा विद्। अब जब लोक-भाषा सम्मेलन था तो निश्चित ही संचालिका महोदया भी लोक भाषा की जानकार रही होंगी। इतना लिखने के बाद मेरे मित्र 'कलम' ने मुझे टोका-

'अरे! तुम कहना क्या चाहते हो?'

मैंने उत्तर दिया- 'यही तो कहने जा रहा हूँ जो मंच पर किसी ने नहीं कहा।'

मित्र ने समझाया, 'तुम तो सदैव नकारात्मक बातें ही करते हो, आज भी करोगे, तुम पत्रकारों का काम ही मीन-मेख निकालना होता है।'

मैंने टोका, 'क्या बस, सब की प्रशंसा ही करते रहें, उनकी गलतियों पर उन्हें टोकें भी नहीं? क्या पत्रकार मात्र प्रशंसा करने के लिए होते हैं।'

कलम ने डांटा, 'अरे! तुम कौन से भाषा विशेषज्ञ हो, कोई पीएचडी-वीएचडी की है क्या तुमने?'

मैंने कहा, 'नहीं, मैं कोई भाषा विशेषज्ञ या पीएचडी नहीं हूँ, मैं तो बस निरा भुस्स पहाड़ी हूँ। बस कुछ खटका तो लिख रहा हूँ।'

'ठीक है बक।' कलम ने झींकते हुए कहा।

मैंने उत्तर दिया, 'मित्र! यह बताओ कि लोक-भाषा सम्मेलन क्या हिन्दी में होने वाले ठहरे अब? संचालक से लेकर मुख्य अतिथि तक ने, किसी ने भी एक पूरी लाइन कुमाउंनी या गढ़वाली में नहीं बोली। लोक-भाषा के उत्थान, विकास कैसे हुआ, व्याकरण क्या है, आठवीं अनुसूची में डालने से क्या लाभ है और क्यों जरूरी है आदि-आदि सब हिन्दी में बताया गया। वास्तव में इस भाषा सम्मेलन का नाम होना चाहिए था- 'उत्तराखण्ड की लोक भाषाओं को मजबूत करने में हिन्दी का योगदान।'

हम लोग कितना भी चिल्लायें कि हमें अपने लोक-भाषा पर गर्व है, यह देववाणी है, इसका व्याकरण महान है, इनमें ढेरों शब्द ऐसे हैं जो हिन्दी या अन्य भाषाओं में नहीं मिलेंगे। लेकिन हम यह सब लोक-भाषा में बोल कर नहीं समझायेंगे। विडम्बना है कि विद्वान जन कुमाउंनी-गढ़वाली बोलना पसन्द नहीं करते हैं, वह कहते हैं कि बोलने में जीभ लटपटा जाती है। लोक-भाषा पर भाषण हिन्दी में, कोटेशन संस्कृत और अंग्रेजी में। काश! कुछ लाइनें लोक-भाषाओं पर भी बोलते। हाल में उपस्थित लोग क्या हिन्दी भाषी थे जिन्हें आप हिन्दी में समझाना चाह रहे थे कि हमारी लोक भाषा एक समृद्ध लोक भाषा है और आप भी इसे पढ़ें-लिखें, इस भाषा को जानें। नहीं पूरे हाल में सभी कुमाउंनी और गढ़वाली बैठे थे। तो आप हिन्दी में क्यों समझा रहे थे। अगर यही सम्मेलन बंगाली, पंजाबी या मराठी आदि में हो रहा होता तो किस भाषा में बोला जा रहा होता?'

मित्र कलम ने कहा, 'अरे! भाई हॉल में बैठे कुमाउनी लोग गढ़वाली भाषा और गढ़वाली लोग कुमाउनी भाषा कहाँ समझ पाते हैं, इसीलिए.

मैंने बीच में टोकते हुए कहा, 'अरे! भाई गढ़वाली भाषा के विकास उत्थान व्याकरण आदि गढ़वाली भाषा जानने वालों को ही तो समझना था, उसी प्रकार कुमाउंनी भाषा के दर्शकों को कुमाउंनी भाषा के बारे। फिर बोलेंगे तो ना समझेंगे, इन दोनों भाषाओं में बहुत ज्यादा अन्तर नहीं है। जब बोलेंगे तो धीरे-धीरे लोग समझेंगे भी। जब बड़े मंचों से विद्वान जन और शहरी लोग लोक-भाषा में बोलने से हिचकते हों तो इन भाषाओं को बचाओ, किसे कह रहे हो? गाँव में रहने वालों को? आप क्या सन्देश देना चाह रहे हैं?'

दारमा संघर्ष समिति का ऐलान, नहीं बनने देंगे बांध

चेतावनी दी

धारचूला। दारमा संघर्ष समिति का लम्बे समय चल रहा आन्दोलन अब भड़क चुका है। ग्रामीणों ने शासन-प्रशासन को चेतावनी दी है कि यदि सीमान्त में बड़े बांध बनाने की प्रक्रिया नहीं रोकी गई तो चारों ओर आन्दोलन भड़केगा। दारमा घाटी में बन रहे बांध के सर्वे कार्य को रोकने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने प्रशासन के सामने अपनी बात रखी।

उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में टीएचडीसी के अधिकारियों व ग्रामीणों की बैठक में बांध सर्वे को लेकर विचार विमर्श किया गया लेकिन ग्रामीणों ने साफ शब्दों में कहा कि प्रदेश में जिस प्रकार आपदाएं हुई हैं वह चेतावनी भी है। यदि बड़े बांधों के कार्य नहीं रोके गये तो भविष्य में बड़ा खतरा होगा। इसी कारण हम लोग अपने क्षेत्र में बांध का विरोध कर रहे हैं।

बताते चलें कि दारमा घाटी में टीएचडीसी की ओर से प्रस्तावित 165 मेगावाट विद्युत परियोजना का ग्रामीणों और दारमा संघर्ष समिति की ओर से विरोध किया जा रहा है। विरोध के कारण महीने भर से कार्य भी बन्द है। इस पूरे मामले को देखते हुए उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में ब्लाक कार्यालय में बैठक भी हुई। टीएचडीसी के भूवैज्ञानिक के.सी. उनियाल, टीएचडीसी के उप महाप्रबन्धक आर.एस.नेगी ने ग्रामीणों को बताया कि अभी सर्वे का कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में 60 प्रतिशता कार्य हो चुका है। शेष 40 प्रतिशत कार्य अक्टूकर नवम्बर तक हो जाएगा। सर्वे के बाद ही डीपीआर तैयार की जाएगी। बताया कि डैम के डिजायन के अनुसार कोई भी गाँव डूब क्षेत्र में नहीं आ रहा है। इस पर संघर्ष समिति जोशीमठ आपदा का उदाहरण देते हुए कहा कि दारमा में किसी भी सूरत में बांध नहीं बनने दिया जायेगा। समिति के संरक्षक नारायण सिंह दरियाल, अध्यक्ष पूरन सिंह ग्वाल, सचिव मनोज नगन्याल, शकुन्तला दताल, भजन ग्वाल ने कहा कि ग्रामीण कोई खतरा नहीं लेना चाहते। एसडीएम ने कहा कि फिर से बैठक कर प्रयास किया जायेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गंगोलीहाट फैलता शहर

इसमें च्वेड़ाच्वेड़ होती रही, यही सब उछलेगा निकाय चुनाव में

चुनाव निकट आते ही दबी फाइलों की उलट-पलट शुरु

बेरीनाग या गंगोलीहाट में से एक सीट रिजर्व हो सकती है

वरिष्ठ कांग्रेसी मुकेश रावल चुनाव के लिये पूरी तैयारी में

सीट महिला हो या पुरुष, भूपाल आर्य दांव लगा चुके हैं

भाजपा के सामने विमल रावल और हरीश धानिक भी

कांग्रेस की ओर से नारायण सिंह बोहरा भी जोर से जुटे हैं

ललित पाठक के इर्द-गिर्द घूम रही है पूरी राजनीति धारा

पि.हि. प्रतिनिधि

गंगोलीहाट। पूरी तहत चुनाव चर्चा के साथ नेताओं की कथनी-करनी व चकारों की गपशप में मशगूल है। नगर क्षेत्र के सभी वार्डों में कितनी च्वेड़ाच्वेड़ पिछले सालों में होती रही, यही सब निकाय चुनाव में उछलेगा। शहर व गाँव को संवारने के नाम पर ठेकेदारी की ईमानदारी पर भी नरम-गरम बातें हो रही हैं। ईष्या द्वेष से भी किसी को आरोपित किया जा सकता है लेकिन यह तो साफ दिखाई दे रहा है कि योजनाओं का पैसा डकारने वाले बिलबिलाए हुए हैं।

लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा कांग्रेस प्रत्याशी को लेकर पार्टीबाजी होगी लेकिन निकाय चुनाव को लेकर जो होगा, वह करिश्माई होने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। राजनीति के धुरी पूर्व ब्लाक प्रमुख ललित पाठक हैं। अनुभवी पाठक जी की पुत्रबधू जयश्री पाठक वर्तमान में चैयरमैन हैं लेकिन आने वाले चुनाव में उनके सामने कठिन चुनौती है। चुनाव में सब मिलाकर जो नाम सुनाई दे रहे हैं- जयश्री पाठक, मुकेश रावल, नारायण बोहरा, भूपाल आर्य, हरीश धानिक, विमल रावल प्रमुख हैं।

अनुमान लगाया जा रहा है कि बेरीनाग या गंगोलीहाट में से एक सीट आरक्षित होगी। स्थिति चाहे कोई बने इन नामों के घेरे से ही समीकरण बनेंगे। भूपाल आर्य ने बहुत साफ घोषणा कर दी है कि चाहे कुछ हो वह पूरी तैयारी में हैं। वरिष्ठ कांग्रेस मुकेश रावल का सीधा सा तर्क है कि वह जन्मजात कांग्रेसी हैं और पार्टी को समर्पित रहे हैं, ऐसे में इस बार का अवसर जनता उन्हें देगी। उनकी ठोस स्थिति को देख पार्टी के वरिष्ठ नेता भी विचार करेंगे। पार्टी के ही नारायण बोहरा पिछले चुनाव के बाद से ही लगातार कोशिश में हैं कि चैयरमैन की सीट चाहे महिला हो या पुरुष उनकी ओर से कोशिश कम नहीं होगी।

पूर्व चैयरमैन विमल रावल की चर्चा भी इस बार खूब है क्योंकि राजनीतिक समीकरण में वह हमेशा सफल रहे हैं। भाजपा से ही हरीश धानिक ने ताल ठोकी है। श्री धानिक व्यापार संघ के अध्यक्ष के अलावा लगातार स्पष्ट बोलने वालों में गिने जाते हैं। ऐसे में बचा कौन? जयश्री, भूपाल आर्य, विमल रावल, हरीश धानिक एक ओर से दूसरी ओर से मुकेश रावल और नारायण सिंह बोहरा हैं। पिछले चुनाव के परिणाम और स्थितियों से सबक लेते हुए इस बार स्थानीय स्तर पर यह कोशिश भी शुरु हो चुकी है कि किसी एक दमदार प्रत्याशी के लिये माहौल बनाने पर बैठकों का दौर हो।

सवाल यही है कि भाजपा और कांग्रेस की बैठकों में किसको सर्वसम्मति से तय किया जायेगा और क्या अन्य ताल ठोकने वाले बात मान लेंगे? फिलहाल च्वेड़ाच्वेड़ की कौक्षी-भौक्षी के बीच दबी फाइलों की उलट-पुलट शुरु हो चुकी है। स्थानीय स्तर की बात दूर तलक सुनाई दे रही है।

हल्द्वानी सीट पर नज़रें बहुत हैं

नगर निगम के मेयर जोगेन्द्र रौतेला दौड़ में सबसे आगे

वार्डों में होने लगी है हलचल, उम्मीद से ज्यादा दिखेंगे

पि.हि. प्रतिनिधि

हल्द्वानी। नगर निगम हल्द्वानी क्षेत्र में भी आगामी निकाय चुनावों को लेकर मिलन समारोह होने लगे हैं। चुनाव रणनीति को लेकर भाजपा-कांग्रेस के अलावा अन्य दलों के नेता अपने प्रयास कर रहे हैं। जनबल-धनबल सब हिसाब से हल्द्वानी का मेयर बनने की होड़ मचती रही है। ऐसे में पार्टियों के बड़े नेता यहाँ तक कि विधायक-सांसद भी सीधे इसमें जुड़ जाते हैं और समीकरण बनने लगते हैं। ऐसे में मेयर डॉ. जोगेन्द्र पाल सिंह रौतेला दौड़ में सबसे आगे दिखाई दे रहे हैं। अपनी बात-व्यहार से श्री रौतेला भाजपा के अलावा अन्य को भी प्रभावित करते हैं। उनकी योग्यता देखते हुए पार्टी ने भी विधायक का टिकट सौंप दिया था। टिकट की लालसा में अन्य नाम भी सुनाई दे रहे हैं लेकिन पार्टी की रणनीति के बाद ही सर्वमान्य चेहरा घोषित होगा। दूसरी ओर कांग्रेस की ओर से खुलकर कोई नाम नहीं है क्योंकि जो नाम लिये जा रहे हैं वह विधायक स्तर की दौड़ में गिने जाते रहे हैं। दीपक बल्यूटिया, ललित जोशी का रुख अभी स्पष्ट नहीं है। व्यापारी नेता नवीन वर्मा भी कद्दावरों में गिने जाते हैं। कुल जमा मेयर सीट पर मेयर जोगेन्द रौतेला के इर्द-गिर्द राजनीति का डेरा दिखाई देगा। नगर निगम के वार्डों में जरूर बड़ी संख्या में प्रत्याशी होने की उम्मीद है क्योंकि पार्टी से टिकट की चाह रखने वालों के अलावा भी चुनाव मैदान की तैयारी हो रही है।

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

सुरेश जोशी

ऊँ साईं भारत गैस एजेंसी

गंगोलीहाट

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

नन्दन सिंह अल्मियां

(सेनि.प्रधानाचार्य)

नौघर, टीटी बाजार

गरुड़

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

अमित रावत

मेडिकल स्टोर
ग्वालदम
(चमोली)

हरीश फर्सवाण

फर्सवाण हार्डवेयर
ग्वालदम
(चमोली)

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

सप्ताह के पर्व

श्रावण कृष्ण पक्ष
17 जुलाई- सोमवती हरियाली अमावस्या
18 जुलाई- पुरुषोत्तम मास प्रारम्भ
21 जुलाई- विनायक चतुर्थी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)